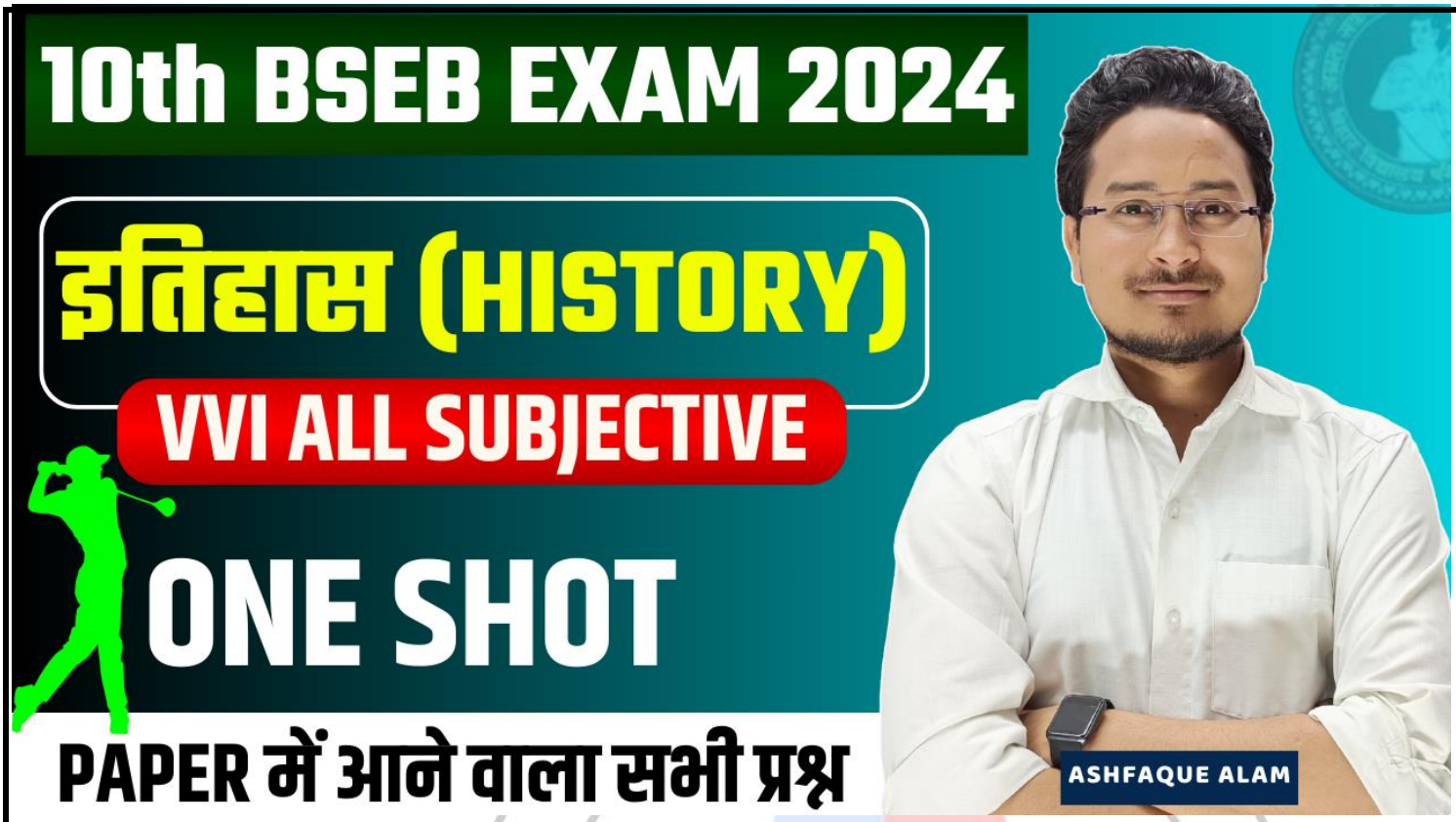

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. राष्ट्रवाद क्या है?

उत्तर - राष्ट्रवाद आधुनिक विश्व की राजनितिक जागृति का प्रतिफल है | यह एक ऐसी भावना है जो किसी भौगोलिक, सांस्कृतिक या सामाजिक परिवेश में रहने वाले लोगों में एकता की वाहक बनती है |

2. इटली के एकीकरण में ऑस्ट्रिया कि भूमिका क्या थी?

उत्तर -इटली, जर्मनी का एकीकरण ऑस्ट्रिया कि शर्त पर हुआ क्योंकि इटलीएवं जर्मनी के प्रांतो पर ऑस्ट्रिया का अधिपत्य तथा हस्तक्षेप तथा,ऑस्ट्रिया को इटलीऔर जर्मनी को बाहर करके ही दोनों का एकीकरण संभव था | दोनों राष्ट्र ने ऑस्ट्रिया को बाहर निकालने के लिए विदेशी सहायता ली |

A Online Solution

3. वियना कांग्रेस की दो उपलब्धियां बताएं –

उत्तर - वियना कांग्रेस की दो उपलब्धियां बताएं –

(i) वियना काँगेस के द्वारा नेपोलियन युग का अंत एवं मेटरनिक युग का आरंभ **(ii)** इस व्यवस्था द्वारा नेपोलियन द्वारा पराजित राजवंशों की पुनर्स्थापना का प्रयास किया गया। फ्रांस और स्पेन में बूब राजवंश का राज स्थापित हुआ। फ्रांस में लुई 18वाँ को राजगद्दी मिली। ने यहाँ गणतंत्र की स्थापना की। वह अपनी सारी संपत्ति राष्ट्र को समर्पित कर साधारण किसान की भाँति जीवन जीने की ओर अग्रसर हुआ। इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का महत्त्वपूर्ण योगदान था |

4. इटली के एकीकरण में मेजिनी का क्या योगदान था ?

उत्तर -मेजिनी को इटली के एकीकरण का 'पैगम्बर' या 'मसीहा' कहा जाता है। राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर उसने कार्बोनारी की सदस्यता ग्रहण की। वह गणतांत्रिक विचारों का समर्थक तथा साहित्यकार था। उसके लेखों से इटली के लोगों में उत्साह और राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई। 1830-31 के विद्रोह में उसने सक्रिय भूमिका निभाई। गणतंत्रवादी उद्देश्यों का प्रचार करने के लिए उसने 'यंग इटली' तथा 'यंग यूरोप' का गठन किया। वह आस्ट्रिया के प्रभाव से इटली को मुक्त कराना चाहता था। 1848 ई० में इटली के एकीकरण का प्रयास किया किन्तु वह असफल रहा और उसे पलायन करना पड़ा

5. खुनी रविवार क्या है ?

उत्तर-रूस में जार के शासन से लोग तंग आ गए थे। उसका अत्याचार अत्यन्त बढ़ गया था। इसलिए 22 जनवरी (पुराने कैलेण्डर में 9 जनवरी 1905) को मजदूर अपने परिवारों के साथ एक शांतिपूर्ण जुलूस में जार से मिलने और उसे एक प्रार्थनापत्र देने के लिए पीटर्सवर्ग स्थित महल की ओर जा रहे थे। उसी समय सैनिकों ने उनपर गोलियाँ बरसा दीं। फलतः एक हजार से अधिक मजदूर मारे गए तथा कई हजार घायल हुए। चूँकि यह घटना रविवार के दिन हुई थी, इसलिए इस दिन को 'खूनी रविवार' कहा जाता है।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◄

6. रूसी क्रांति के दो कारणों का वर्णन करें।

उत्तर- रूसी क्रांति के दो महत्त्वपूर्ण कारण थे-

(i) निरंकुश शासन - रूसी क्रान्ति का एक महत्त्वपूर्ण कारण जारशाही की निरंकुशता था। रूस का जार हमेशा विरोधियों को कठोर से कठोर दंड दिया करता था। लोगों को किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं थी। जार की दमनकारी व्यवस्था और अत्याचार से प्रजा का विरोध और असंतोष बढ़ता गया|

(ii) किसानों एवं मजदूरों की दयनीय स्थिति - रूसी समाज के बहुसंख्यक किसान वर्ग की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। मजदूर तथा श्रमिक भी शोषण के शिकार थे। अतः किसान - मजदूर जारशाही के विरोधी बन गए|

7. अक्टूबर क्रांति क्या है?

उत्तर- 7अक्टूबर 1917 ई० में बोल्शेविकों ने पेट्रोग्राद के स्टेशन, बैंक, डाकघर, टेलीफोन केंद्र, कचहरी तथा अन्य सरकारी भवनों पर अधिकार कर लिया| केरेन्सकी भाग गया और शासन की बागड़ोर बोल्शेविकों के हाथों में आ गयी जिसका अध्यक्ष लेनिन को बनाया गया| इसी क्रांति को बोल्शेविक क्रांति या अक्टूबर क्रांति कहा जाता है|

8. सर्वहारा वर्ग किसे कहते है?

उत्तर- समाज का वह वर्ग जिसमें गरीब किसान, कृषक मजदूर,सामान्य मजदूर,श्रमिक एवं आम लोग शामिल हो, उसे सर्वहारा वर्ग कहतेहै|

9. साम्यवादी एक नई आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था थी, कैसे ?

उत्तर- रूस में 1917 की क्रांति के बाद नई आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था की स्थापना हुई। समाज में जितनी असामंताएं थी उसे समाप्त कर दी गयी। पूँजीपति और जमींदार वर्ग को जड़ से उखाड़ दिया गया। समाज में एक ही वर्ग रहा , जो साम्यवादी नागरिकों का था। काम के अधिकार को संवैधानिक अधिकार बना दिया गया। इस प्रकार , एक वर्गविहीन और शोषणमुक्त सामाजिक - आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई। अतः हम कह सकते हैं कि रूसी क्रांति के बाद साम्यवाद एक नई कि एवं सामाजिक व्यवस्था थी|

BY Ashfaque Sir A Online Solution

10. क्रांति से पूर्व रूसी किसानों की स्थिति कैसी थी ?

उत्तर- रूस में जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग किसानों का ही था परंतु उनकी स्थिति बँधुआ मजदूरों की तरह थी। वे सामंतों के अधीन थे और जमीन से बँधे हुए थे। 1861 में जार एलेक्जेंडर द्वितीय ने कृषि दासता को समाप्त कर दिया था, परंतु इससे किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। उनके खेत बहुत छोटे-छोटे थे जिन पर वे परम्परागत ढंग से खेती करते थे। उनके पास पूँजी का भी अभाव था तथा करों के बोझ से वे दबे हुए थे। ऐसे में किसानों की स्थिति काफी दयनीय हो चुकी थी और किसान 1917 की क्रांति के मजबूत स्तंभ बन गए।

11. नापाम और एजेंट ऑरेंज क्या था?

उत्तर- नापाम और एजेंट ऑरेंज रासायनिक घातक हथियार थे। अमेरिका ने इसका उपयोग वियतनामी युद्ध में किया। नापाम में गैसोलिन मिला था जो ज्वलनशील होने के कारण त्वचा से चिपककर जलता रहता था। एजेंट ऑरेंज खतरनाक जहर था। उसे जिन ड्रमों में रखा जाता था उनपर ऑरेंज रंग की पट्टियाँ बनी होती थी। इनके प्रयोग से धन-जन की भारी हानि हुई।

12. हो - ची - मिन्ह का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- हो ची मिन्ह वियतनामी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। वे साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थे। 1925 में उन्होंने 'वियतनामी क्रांतिकारी दल' की स्थापना की एवं फ्रांसीसी साम्राज्यवाद से लड़ने के लिए कार्यकर्त्ताओं के सैनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की। 1930 ई. में राष्ट्रवादी गुटों को एकत्रित कर 'वियतनाम कॉग सान देंग दल की स्थापना की। 1945 ई० में उन्होंने लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना की। वे जीवन पर्यंत वियतनाम की स्वतंत्रता और अखण्डता के लिए संघर्षरत रहे।

13. दांडी यात्रा का क्या उद्देश्य था?

उत्तर- दांडी यात्रा की शुरुआत 12 मार्च , 1930 को नमक कानून भंग करने के लिए की गई। नमक के उत्पादन पर अंग्रेजी सरकार का नियंत्रण था। गाँधीजी इसे अन्याय समझते थे। अतः दांडी पहुँचकर 6 अप्रैल को समुद्र के पानी से नमक बनाकर उन्होंने नमक कानून भंग किया। जिसके कारण सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

14. असहयोग आंदोलन प्रथम जन - आंदोलन था। कैसे ?

उत्तर- महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाया गया असहयोग आंदोलन प्रथम जन - आंदोलन था।इस आंदोलन को असहयोग और बहिष्कार से शुरुआत किया गया। इस आंदोलन का व्यापक जनाधार था। इस आंदोलन में शहरी वर्ग में मध्यम वर्ग तथा ग्रामीण क्षेत्र में किसानों , आदिवासियों एवं श्रमिकों का व्यापक समर्थन मिला। इस आंदोलन में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के साथ - साथ भारतीयों ने मेसोपोटामिया युद्ध में भरती होने से इनकार कर दिया।

15. स्वदेशी आंदोलन का उद्योग पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- 1905 के बंग - भंग आंदोलन ने स्वदेशी और बहिष्कार की नीति से भारतीय उद्योग लाभान्वित हुए। धागा के स्थान पर कपड़ा बनाना आरंभ हुआ। इससे वस्त्र उत्पादन में तेजी आई। 1912 तक सूती वस्त्र का उत्पादन दोगुना हो गया। उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयात शुल्क में वृद्धि करे तथा देशी उद्योगों को रियायत प्रदान करे। कपड़ा उद्योग के अतिरिक्त अन्य छोटे उद्योगों का भी विकास हुआ।

16. बिहार के किसान आंदोलन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर- 1922-23 में शाह मुहम्मद जुबैर ने मुंगेर में किसान सभा का गठन किया। बिहार में किसान आंदोलन को सहजानन्द ने प्रभावी बनाया। 1928 में इन्होंने बिहटा में तथा 1929 में सोनपुर में किसान सभा की स्थापना की। 1936 में उन्हीं की अध्यक्षता में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ। पहली सितम्बर , 1936 को बिहार सहित समूचे देश में किसान दिवस ' मनाया गया। किसानों ने बकाश्त आंदोलन भी चलाया। किसान जमींदारी शोषण , बेगारी की समाप्ति एवं लगान में कमी की माँग कर रहे थे।

17. चम्पारण सत्याग्रह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- भारत में सत्याग्रह का पहला प्रयोग महात्मा गाँधी ने चंपारण में ही किया था। चंपारण सत्याग्रह अप्रैल, 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ थाजिसका कारण वहाँ के किसानों के ऊपर निलहे बागान मालिकों का अत्या. चार था। उस समय चम्पारण में बागान व्यवस्था के अंतर्गत नील की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही थी। निलहे साहबों ने अपनी कोठियाँ स्थापित कर रखी थी। ये किसानों को

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

तीनकठिया प्रणाली के अंतर्गत नील की खेती करने को बाध्य करते थे। इस व्यवस्था के द्वारा किसानों को अपनी सबसे अच्छी उपजाऊ भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती करनी होती थी। किसान नील उपजाना नहीं चाहते थे, क्योंकि इससे जमीन की उर्वरता कम हो जाती थी। किसानों को उपज का उचित मूल्य भी नहीं मिलता था जिससे उनकी स्थिति काफी दयनीय हो गई थी। इसके अलावा किसानों से बेगारी भी बागान मालिकों द्वारा कराई जाती थी। उनका आर्थिक और शारीरिक शोषण भी किया जाता था। इससे किसानों की स्थिति काफी चिंताजनक हो गयी थी। इन्हीं बातों को लेकर महात्मा गाँधी ने चंपारण में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया। 1918 में चंपारण एग्रेरियन कानून पारित कर निलहों का अत्याचार रोक दिया गया एवं तीन कठिया प्रणाली समाप्त की गई।

18. दांडी यात्रा का उद्देश्य क्या था?

उत्तर-नमक के व्यवहार और उत्पादन पर सरकारी नियंत्रण था। गाँधीजी इसे अन्याय मानते थे एवं इसे समाप्त करना चाहते थे। नमक कानून भंग करने के लिए 12 मार्च, 1930 को गाँधीजी अपने 78 सहयोगियों के साथ दांडी यात्रा (नमक यात्रा) पर निकले। वे 6 अप्रैल, 1930 को दांडी पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने समुद्र के पानी से नमक बनाकर नमक कानून भंग किया। इसी के साथ नमक सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा आंदोलन) आरंभ हुआ और शीघ्र ही पूरे देश में फैल गया।

19. खिलाफत आन्दोलन क्यों हुआ?

उत्तर- 'तुर्की का सुल्तान' खलीफा इस्लामी जगत का धर्मगुरु भी था। सेवर्स की संधि द्वारा उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा नष्ट कर दी गई। इससे भारतीय मुसलमान उद्वेलित हो गए। खलीफा को पुराना गौरव या उसकी प्रतिष्ठा को पुनस्थापित करने के लिए 1919 में अली बंधुओं ने खिलाफत समिति बनाकर आंदोलन करने की योजना बनाई। 17 अक्टूबर, 1919 को खिलाफत दिवस मनाया गया। 1924 में तुर्की के शासक मुस्तफा कमाल पाशा द्वारा खलीफा के पद को समाप्त कर देने से खिलाफत आंदोलन स्वतः समाप्त हो गया।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

20. औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को किस तरह प्रभावित किया था ?

उत्तर- औद्योगीकरण और कारखानेदारी प्रथा के विकास का मजदूरों की पर बुरा प्रभाव पड़ा। शहरों में उन्हें काम ढूँढने, आवास तथा छंटनी की समस्या से जूझना पड़ा। उन्हें कम पारिश्रमिक पर हो लंबे समय तक काम करना पड़ता था। बेकारी की समस्या से ग्रस्त मजदूर मशीनीकरण का विरोध करने लगे। वे संगठित होकर अपनी स्थिति में सुधार के लिए आंदोलन करने लगे।

21. औद्योगिक क्रांति के किन्हीं दो नकारात्मक प्रभावों को बताएँ।

उत्तर-औद्योगिक क्रांति के दो नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं ...

(i) औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर उत्पादन होना हुआ जिसकी खपत के लिए यूरोप में उपनिवेशों की होड़ शुरू हो गयी और आगे चलकर इस उपनिवेशवाद ने साम्राज्यवाद का रूप में लिया।

(ii) औद्योगिक क्रांति के कारण समाज में पूँजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग का विकास हुआ। उद्योगों पर पूँजीपति वर्ग का नियंत्रण स्थापित हो गया इन्होंने मजदूरों का शोषण आरंभ किया जिससे श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। इनकी स्थिति शोचनीय थी। वे शोषण , गरीबी और भुखमरी के शिकार हो गए।

22. स्लम पद्धति की शुरुआत कैसे हुई ?

उत्तर-औद्योगिकीकरण के कारण बड़े - बड़े कारखाने स्थापित हुए जिसमें काम करने के लिए बड़ी संख्या में गाँवों से मजदूर पहुँचने लगे। वहाँ रहने को कोई व्यवस्था नहीं थी। मजदूर कारखाने के निकट रहें , इसलिए कारखाने के मालिकों ने उनके लिए छोटे - छोटे मकान बनवाए। जिसमें सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। इन मकानों में हवा , पानी तथा रोशनी तथा साफ - सपई की व्यवस्था भी नहीं थी। इस प्रकार औद्योगिकीकरण के कारण स्लम पद्धति की शुरुआत हुई।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

23. औद्योगिक क्रांति क्या है?

उत्तर-औद्योगीकरण ऐसी प्रक्रिया थी जिसके उत्पादन की पद्धति को बदल दिया 18 वीं शताब्दी के बाद से उत्पादन में नई तकनीक और मशीनों का व्यवहार आरंभ हुआ। मानव श्रम के स्थान पर मशीन उत्पादन का काम करने लगी। उत्पादन की यह नई प्रक्रिया औद्योगिक क्रांति है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

24. श्रमिक वर्ग का आगमन शहरों में किन परिस्थितियों के अंतर्गत हुआ?

उत्तर- आधुनिक शहरों में जहाँ एक ओर पूँजीपति वर्ग का अभ्युदय हुआ तो दूसरी ओर श्रमिक वर्ग का। शहरों में फैक्ट्री प्रणाली की स्थापना के कारण कृषक वर्ग जो लगभग भूमिविहीन कृषि वर्ग के रूप में थे, शहरों की ओर बेहतर रोजगार के अवसर को देखते हुए भारी संख्या में इनका पलायन हुआ। इस तरह शहरों में रोजगार की अपार संभावनाओं को देखते हुए गाँवों से शहरों की ओर श्रमिक वर्ग का आगमन हुआ।

25. ग्रामीण तथा नगरीय जीवन के बीच किन्हीं दो भिन्नताओं का उल्लेख करें।

उत्तर- गाँवों एवं शहरों में सामाजिक जीवन ज्यादा तर कार्यों में भिन्नता के आधार पर किया जाता है। ग्रामीण आबादी ज्याद तर कृषि कार्यों में लगे रहते हैं| इसके विपरीत शहरी आबादी ज्यादा तर गैर - कृषि कार्यों में , नौकरी , उद्योग तथा व्यापार में लगे रहती है।

26. शहरों के उद्भव में मध्यम वर्ग की भूमिका किस प्रकार की रही ?

उत्तर- शहरों के उद्भव ने मध्यम वर्ग को काफी शक्तिशाली बनाया। ये नए समाज के रूप में उभरे। इस समूह में बुद्धिजीवी , नौकरी पेशा वाले , राजनीतिज्ञ , चिकित्सक , वकील , शिक्षक , व्यापारी प्रमुख थे। व्यावसायिक वर्ग नगरों के विकास का कारण बना जिससे शहरों को नया सामाजिक - आर्थिक स्वरूप प्राप्त हुआ।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◄

27. किन तीन प्रक्रियाओं के द्वारा आधुनिक शहरों की स्थापना निर्णायक रूप से हुई ?

उत्तर- जिन तीन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं ने आधुनिक शहरों की स्थापना में निर्णायक भूमिका निभाई वे निम्न हैं -

(i) औद्योगिक पूँजीवाद का उदय

(ii) विश्व के भू - भाग पर औपनिवेशिक शासन की स्थापना तथा

(iii) लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास

28. न्यू डील से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर :-आर्थिक मंदी के प्रभावों को समाप्त करने एवं उसे नियंत्रित करने के उद्देश्य से 1932 में अमेरिको राष्ट्रपति फ्रैंकलीन डी ० रूजवेल्ट ने नई आर्थिक नीति अपनाई जिसे ' न्यू डील ' का नाम दिया गया। इस नई नीति के अनुसार जन कल्याण की व्यापक योजना के अंतर्गत आर्थिक , राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियों को ठीक करने का प्रयास किया गया।

29. विश्व बाजार किसे कहते हैं?

उत्तर :-उस बाजार हम विश्व बाजार कहेंगें जहाँ विश्व के अनेक देशों की वस्तुएं आमलोगों को खरीदने के लिए उपलब्ध हों | जैसे भारत के मुंबई शहर को विश्व बाजार कहा जाता है क्योंकि यह भारत की आर्थिक राजधानी है |

30. भूमंडलीकरण किसे कहते हैं?

उत्तर :-भूमंडलीकरण वह प्रक्रिया है जो राजनीतिक , आर्थिक , सामाजिक , वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विश्व स्तर पर सभी को जोड़ने की प्रक्रिया है जो विश्व के विभिन्न भागों के लोगों को आपस में जोड़ने का प्रयास करता है

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

31. रेशम मार्ग से आप क्या समझते हैं?

उत्तर :-ईसा की आरंभिक सदियों में सबसे प्रमुख मार्ग रेशम मार्ग था। चीनी व्यापारी इसी मार्ग से रेशम विभिन्न देशों तक ले जाते थे। रेशम मार्ग चीन से आरंभ होता था, तथा जमीनी मार्ग द्वारा मध्य एशिया होते हुए यूरोप तक जाता था। मध्य एशिया से इसकी एक शाखा भारत तक भी आती थी। इसी प्रकार समुद्री रेशम मार्ग से भी एशिया, यूरोप तथा अफ्रीका से जुड़े थे। इसी रास्ते से 'चीनी पॉटकी', वस्त्र, मसाले, सुगंधित पदार्थ विश्व के विभिन्न भागों तक ले जाये जाते थे। सिल्क मार्ग से सिर्फ व्यापार ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी हुआ। तात्कालिकव्यापारिक जगत में इस मार्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।

32. भारतीयों द्वारा वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट का विरोध क्यों किया गया ?

उत्तर :- लार्ड लिटन ने 1878 ई ० में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लाकर भारतीय प्रेस को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया । इसका उद्देश्य देशी भाषा के समाचार पत्रों पर कठोर अंकुश लगाना था । अधिनियम के अनुसार भारतीय समाचार पत्र ऐसा कोई समाचार प्रकाशित नहीं कर सकते थे जो अंग्रेजी सरकार के प्रति गलत भावना प्रकट करता हो। इस कानून द्वारा प्रेस पर कठोर नियंत्रण लगाया गया । इस प्रतिबंध से बचने के लिए भारतीय राष्ट्रवादियों ने कड़ा विरोधकिया

33. छापाखाना यूरोप कैसे पहुंचा?

त्तर :- 1295 में मार्कोपोलो जब चीन से इटली वापस आया तो वह अपने साथ चीन में प्रचलित वुड ब्लॉक छपाई की तकनीक लेता आया । इससे हस्तलिखित पांडुलिपियों के स्थान पर वुड ब्लॉक की छपाई की तकनीक विकसित हुई । इटली से आरंभ होकर यह तकनीक यूरोप के अन्य भागों में भी फैल गई ।

34. पाण्डुलिपि क्या है? इसकी क्या उपयोगिता है ?

उत्तर :-छापाखाना के पहले भोजपत्र या हाथ से बने कागज पर हाथ से सुन्दर अक्षरों में लिखकर पुस्तकें तैयार की जाती थीं । इनके पन्नों को सिलकर जिल्द चढ़ा दी जाती थी। इसी को पाण्डुलिपि कहा जाता था | इसका उपयोग कर संस्कृत , पाली , प्राकृत , क्षेत्रीय भाषाओं , अरबी तथा फारसी में ऐसी अनेक पाण्डुलिपियाँ तैयार की गई |

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

35. गुटेनवर्ग ने मुद्रण यंत्र का विकास कैसे किया?

उत्तर :-गुटेनबर्ग ने जैतून पेरने की मशीन को आधार बनाकर प्रिंटिंग प्रेस विकास किया। इस मशीन में पेच की सहायता से लंबा हैंडल लगा होता था। पेच को घुमाकर प्लाटेन को गीले कागज पर दबाया जाता था। साँचे का उपयोग कर अक्षरों की धातु की आकृतियों को ढाला गया। इन टाइपों को घुमाने की व्यवस्था भी की गई। इस प्रकार मुद्रण यंत्र का विकास हुआ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रसार में नेपोलियन बोनापार्ट के योगदानों की विवेचना करें।

उत्तर -यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रसार में फ्रांस की राज्यक्रांति तत्पश्चात नेपालियन के आक्रमणों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। नेपोलियन बोनापार्ट ने 1799 में डायरेक्टरी का शासन समाप्त कर प्रथम कॉन्सल के रूप में फ्रांस में सत्ता पर अधिकार करते हुए 1804 में वह फ्रांस का सम्राट बन बैठा। सम्राट के रूप उसने ब्रिटेन के अतिरिक्त समस्त यूरोप पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इसके साथ ही फ्रांसीसी क्रांति का संदेश नेपोलियन के प्रभाववाले यूरोपीय क्षेत्रों पर पड़ा। फ्रांसीसी आधिपत्यवाले राज्यों में वैसी ही संस्थाएँ स्थापित की गई जो फ्रांस में प्रचलित थी। फ्रांस पर आश्रित राज्यों में भी नेपोलियन संहिता, फ्रांसीसी शासन और अर्थव्यवस्था लागू की गई। 1804 में नेपोलियन संहिता द्वारा जन्मजात विशेषाधिकार समाप्त कर दिया गया। कानून के समक्ष समानता का सिद्धांत अपनाया गया। इससे फ्रांस अधिकृत यूरोपीय देशों में एक नई आशा जगी। वहाँ भी तानाशाही के विरुद्ध आवाज उठने लगी तथा राष्ट्रवाद का प्रसार हुआ। यूरोप के कई राज्यों में नेपोलियन के अभियानों द्वारा नवयुग का संदेश पहुँचा।

नेपोलियन ने जर्मनी और इटली के राज्यों को भौगोलिक नाम की परिधि से बाहर कर उसे वास्तविक एवं राजनैतिक रूपरेखा प्रदान की। जिससे इटली और जर्मनी के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। दूसरी तरफ नेपोलियन की नीतियों के कारण फ्रांसीसी प्रभुसत्ता और आधिपत्य के विरुद्ध यूरोप में राष्ट्रवाद का प्रसार हुआ तथा देशभक्ति की भावना बलवती होने लगी।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

2. 1848 ई० की फ्रांसीसी क्रांति के क्या कारण थे?

उत्तर - 1830 की क्रांति के बाद लुई फिलिप फ्रांस का राजा बना। उसने अपने विरोधियों को खुश करने के लिए 'स्वर्णिम मध्यमवर्गीय नीति अवलंबन करते हुए सन् 1840 में गीजों को प्रधानमंत्री नियुक्त किया, जो कट्टर प्रतिक्रियावादी था। वह किसी भी तरह के वैधानिक, सामाजिक और आर्थिक सुधारों के विरुद्ध था। फिलिप के पास कोई सुधारात्मक कार्यक्रम नहीं था और न ही उसे विदेश नीति में कोई सफलता हासिल हो रही थी। उसके शासनकाल में देश में भुखमरी एवं बेरोजगारी व्याप्त हो गई। सुधारवादियों ने 22 फरवरी, 1848 ई० को पेरिस में वियर्स के नेतृत्व में एक विशाल भोज का आयोजन किया। राजा ने इस पर रोक लगा दी। अतः पेरिस में विरोध प्रदर्शन हुए और जुलूस निकाले गए। इस पर पुलिस ने गोली चला दी। जिसमें अनेक लोग मारे गए। अतः दमनकारी नीति अपनाए जाने के कारण 1848 ई० की क्रांति आरंभ हो गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

3. लेनिन के जीवन एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर- रूसी इतिहास में लेनिन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह बोल्शेविक क्रांति का प्रणेता था। उसका जन्म 10 अप्रैल 1870 को वोल्गा नदी के किनारे स्थित सिमब्रस्क नामक गाँव में हुआ था। वह आरम्भ से ही विद्रोही था। लेनिन जारशाही का कट्टर दुश्मन था। वह बोल्शेविक दल का सदस्य बन गया। लेनिन ने 1905 की रूसी क्रांति में भाग लिया। क्रांति असफल हो गई और उसे रूस छोड़कर जाना पड़ा। 1917 की क्रांति के समय जर्मनी की सहायता से वह रूस पहुँचा। उसने रूस पहुँचकर बोल्शेविक दल का कार्यक्रम स्पष्ट किया। लेनिन ने तीन नारे दिए भूमि , शांति और रोटी भूमि किसानों को , शांति सेना को और रोटी मजदूरों को ट्राटस्की के सहयोग से उसने करेन्सकी की सरकार का तख्ता पलट दिया। लेनिन नई बोल्शेविक सरकार का अध्यक्ष बन गया। उसका उद्देश्य रूस का नवनिर्माण करना था

लेनिन की उपलब्धियाँ- सर्वप्रथम लेनिन ने जर्मनी के साथ युद्ध बंद कर दिया। 1918 में जर्मनी के साथ ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि की। उसने राष्ट्रीयता का सिद्धांत अपनाया तथा साम्राज्यवाद विरोधी नीति अपनाई। ' चेका ' और ' लाल सेना ' की सहायता से क्रांतिकारियों का दमन किया। बोल्शेविक सरकार ने नई आर्थिक नीति लागू की जिसके तहत देश की सारी सम्पत्ति तथा उत्पादन और वितरण के समस्त

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

साधनों पर सरकार का आधिपत्य हो गया। स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिए। धर्मनिरपेक्षता की नीति अपनाई। निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की। लेनिन ने प्रशासनिक सुधार कर पुराने नौकरसाह को हटा दिया। आर्थिक सुधारों के लिए 1921 ई० में नयी आर्थिक नीति अपनाई। इस प्रकार उन्होंने रूस का नवनिर्माण किया। 1924 में उनकी मृत्यु हो गई।

4. रूसी क्रांति के प्रभाव की विवेचना करें।

क्रांति के दूरगामी और व्यापक प्रभाव पड़े। इसका प्रभाव न सिर्फ रूस पर बल्कि विश्व के अन्य देशों पर भी पड़ा। इस क्रांति के रूस पर निम्नलिखित प्रभाव हुए –

(i) स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत -1917 की बोल्शेविक क्रांति के परिणामस्वरूप अत्याचारी एवं निरंकुश राजतंत्र की समाप्ति हो गई। रोमनोव वंश के शासन की समाप्ति हुई तथा रूस में जनतंत्र की स्थापना की गई।

(ii) सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद की स्थापना- बोल्शेविक क्रांति ने पहली बार शोषित सर्वहारा वर्ग को सत्ता और अधिकार प्रदान किया। नई व्यवस्था के अनुसार भूमि का स्वामित्व किसानों को दिया गया। उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व समाप्त कर दिया गया। मजदूरों को मतदान का अधिकार दिया गया।

(iii) नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना- क्रांति के बाद रूस में एक नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की गई। यह व्यवस्था साम्यवादी विचारधारा के अनुकूल थी। प्रशासन का उद्देश्य कृषकों एवं मजदूरों के हितों की सुरक्षा करना एवं उनकी प्रगति के लिए कार्य करना था। रूस में पहली बार साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई।

(iv) नई सामाजिक - आर्थिक व्यवस्था- क्रांति के बाद रूस में नई सामाजिक आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई। सामाजिक असमानता समाप्त कर दी गई। वर्गविहीन समाज का निर्माण कर रूसी समाज का परंपरागत स्वरूप बदल दिया गया।

(v) साम्यवादी सरकारों की स्थापना- रूस के समान विश्व के अन्य देशों चीन , वियतनाम इत्यादि में भी बाद में साम्यवादी सरकारों की स्थापना हुई। साम्यवादी विचारधारा के प्रसार और प्रभाव को देखते हुए राष्ट्रसंघ ने भी मजदूरों की दशा में सुधार लाने के प्रयास किए। इस उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ की स्थापना की गई।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें। ◀

5. हिन्द - चीन में फ्रांसीसी प्रसार का वर्णन करें।

अथवा , हिन्द - चीन उपनिवेश स्थापना का उद्देश्य क्या था ?

Ans:- हिन्द चीन में फ्रांसीसियों के उपनिवेश स्थापना के कई कारण थे।

(i) आर्थिक कारण- वियतनाम एक कृषि प्रधान देश था। यहाँ चावल और रबर का उत्पादन होता था। यहाँ विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ

जैसे — कोयला , टीन , जस्ता , टंगस्टन , क्रोमियम थे। इनका उपयोग फ्रांसीसी अपने उद्योगों के विकास में करना चाहते थे। हिन्द - चीन में फ्रांस को बड़ा व्यापार भी मिल सकता था।

(ii) व्यापारिक सुरक्षा - फ्रांस को डच एवं ब्रिटिश व्यापारिक कम्पनियों की प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ता था। चीन में उनके व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वी अंग्रेज थे। भारत में फ्रांसीसी कमजोर हो गए थे।

अतः आर्थिक तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से फ्रांसीसियों के लिए हिन्द - चीन सुरक्षित थे क्योंकि वहाँ से भारत और चीन दोनों जगहों को संभाल सकते थे। औद्योगीकरण के लिए कच्चे माल की आपूर्ति उपनिवेशों से होती थी।

(iii) यूरोपीय सभ्यता का विकास करना - फ्रांसीसियों का एक उद्देश्य हिन्द - चीन वासियों को यूरोपीय सभ्यता से अवगत कराकर उन्हें सभ्य बनाना था। इसके अतिरिक्त कैथोलिक धर्म का प्रचार भी उपनिवेश स्थापना का एक उद्देश्य था।

6. हिन्द- चीन में राष्ट्रवाद के विकास का वर्णन करें।

उत्तर- हिंद- चीन में राष्ट्रवाद के विकास में विभिन्न तत्त्वों का योगदान था, जिनमें औपनिवेशिक शोषण की नीतियों तथा स्थानीय आंदोलनों ने काफी बढ़ावा दिया। 20 वीं शताब्दी के शुरुआत में यह विरोध और मुखर होने लगा। उसी परिपेक्ष्य में 1903 ई० में फान- बोई चाऊ ने 'दुई तान होई' नामक एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की जिसके नेता कुआंग दें थे। फान- बोई चाऊ ने "द हिस्ट्री ऑफ द लॉस ऑफ वियतनाम" लिखकर हलचल पैदा कर दी।

1905 में जापान द्वारा रूस को हराया जाना हिंद-चीनियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया। साथ ही रूसो एवं मांटेस्क्यू जैसे फ्रांसीसी विचारकों के विचार भी इन्हें उद्वेलित कर रहे थे। इसी समय एक दूसरे राष्ट्रवादी नेता फान- चू-त्रिन्ह हुए जिन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन के राजतंत्रीय स्वरूप की गणतंत्रवादी बनाने का प्रयास किया। जापान में शिक्षा प्राप्त करने गए छात्र 1. इसी तरह के विचारों के समर्थक थे।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

इन्हीं छात्रों ने वियतनाम कुवान फुक होई (वियतनाम मुक्ति एसोसिएशन) की स्थापना की। हालाँकि हिंद-चीन में प्रारंभिक राष्ट्रवाद का विकास कोचिन चीन, अन्नाम, तोंकिन जैसे शहरों तक ही सीमित था, परंतु जब प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ तो इन्हीं प्रदेशों के हजारों लोगों को सेना में भर्ती किया गया, हजारों मजदूरों को बेगार के लिए फ्रांस ले जाया गया। युद्ध में हिंद- चीनी सैनिकों की ही बड़ी संख्या में मृत्यु हुई। इन सब बातों की तीखी प्रतिक्रिया हिंद-चीनी लोगों पर हुई और 1914 ई0 में ही देशभक्तों ने एक "वियतनामी राष्ट्रवादी दल नामक संगठन बनाया। 1930 के दशक की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने भी राष्ट्रवाद के विकास में योगदान किया।

7. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गाँधीजी की भूमिका की विवेचना करें|

उत्तर- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में 1919-1947 का काल गाँधी युग के नाम से जाना जाता है। राष्ट्रीय आंदोलन को गाँधीजी ने एक नई दिशा दिया। सत्य - अहिंसासत्याग्रह का प्रयोग कर गाँधीजी भारतीय राजनीति में छा गए। इन्हीं अरबों का सहारा लेकर उन्होंने औपनिवेशिक सरकार के विरुद्ध राष्ट्रीय आंदोलनों को जन आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।

1917-18 में उन्होंने चंपारण , खेड़ा और अहमदाबाद में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया। 1920 ई ० में गाँधीजी ने अहसयोग आंदोलन आरंभ किया। जिसमें बहिष्कार , स्वदेशी तथा रचनात्मक कार्यक्रमों पर बल दिया गया। 1930 में गाँधी जी ने सरकारी नीतियों के खिलाफ दूसरा व्यापक आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया। इसका आरंभ उन्होंने 12 मार्च , 1930 को दांडी यात्रा से किया। गाँधीजी का निर्णायक आंदोलन 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन था जिसमें उन्होंने लोगों को प्रेरित करते हुए ' करो या मरो ' का मंत्र दिया। गांधीजी के लगातार कोशिशों के बाद ही 15 अगस्त , 1947 को भारत को आजादी प्राप्त हुई । वे एक राजनीतिक नेता के साथ – साथ अच्छे चिंतन समाजसुधारक एवं हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक थे।

8. जलियाँवाला बाग हत्याकांड का वर्णन संक्षेप में करें।

उत्तर- डॉ ० सत्यपाल तथा डॉ . सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी और रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए अमृतसर के जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल , 1919 को एक सभा हो रही थी। सभा में पूर्णत : शांति थी। इसी समय जनरल डायर नामक एक अंग्रेज अफसर आया और एक मात्र प्रवेश द्वार को घेर लिया। उसने बिना कोई

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

चेतावनी दिए सभा उपस्थित निहत्थी जनता पर गोलियाँ चलवा दीं। गोलीबारी लगभग दस मिनट तक करीब 1650 राउंड चलती रही। फलतः करीब हजारों लोग मारे गए और कई लोग घायल हुए। अत्याचार की हद तब और मनुष्यता का उल्लघंन कर गई जब पंजाब में फौजी कानून (मार्शल लॉ) लगा दिया गया। पंजाब में हुए अत्याचार की खबर पाते ही सारे देश में खलबली मच गई। लेकिन , फौजी कानून से जनता डरी नहीं हुई और इसके तुरंत बाद खिलाफत और असहयोग आंदोलन आरंभ हुए। डायर की इस ' बेमिसाल पशुता और जान - बूझकर किए गए नरसंहार ' से अंग्रेजों की आत्मा काँप उठी और उन्होंने भी इसकी निंदा की थी। इस घटना से नाराज होकर गाँधीजी ने ' केसर - ए - हिन्द ' तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ' सर ' की उपाधि लौटा दी।

4. ' अखिल भारतीय ' कांग्रेस की स्थापना कैसे हुई ? इसके प्रारंभिक उद्देश्य क्य थे ?

उत्तर- 1885 ई ० के पूर्व देश में कोई अखिल भारतीय राजनीतिक संस्था नहीं थी। आर्म्स ऐक्ट और इलबर्ट बिल पर हुए विवाद एवं भारतीय प्रतिक्रिया को देखते हुए एक अखिल भारतीय राजनीतिक दल (संगठन) की आवश्यकता महसूस की गई। अतः 1883 ई ० में इंडियन एसोसिएशन के सचिव आनंद मोहन बसु ने कलकत्ता में ' नेशनल कॉन्फ्रेस ' का आयोजन किया , जिसका उद्देश्य बिखरे हुए राष्ट्रवादी शक्तियों को एक जुट करना था। इसी समय एक उदारवादी सेवानिवृत्त अंग्रेज पदाधिकारी ए ० ओ ० ह्यूम भी इस दिशा में प्रयासरत थे। ह्यूम ने लॉर्ड डफरिन एवं ब्रिटिश पार्लियामेन्ट्री कमिटी की सहमति से नेशनल कांग्रेस की स्थापना की घोषणा दिसम्बर , 1885 में की। इसका अधिवेशन 28 दिसम्बर , 1885 को मुंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुआ। इसकी अध्यक्षता उमेशचन्द्र बनर्जी ने की। काँग्रेस का आरंभिक उद्देश्य राष्ट्रीय एकता स्थापित करना , भारतीयों में मैत्री और सहयोग की भावना विकसित करना , देशहित में कार्य करना , राजनैतिक तथा सामाजिक मुद्दों पर विचार विमर्श करना , भारतीय समस्याओं को दूर करने के लिए अंग्रेजी सरकार को स्मारपत्र देना आदि।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

5. असहयोग आंदोलन के कारण एवं परिणाम का वर्णन करें।

उत्तर-महात्मा गाँधी के नेतृत्व में प्रारंभ किया गया प्रथम जन-आंदोलन असहयोग आंदोलन था। इस आंदोलन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(i) रॉलेट कानून — 1919 ई. में न्यायाधीश सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में रॉलेट कानून (क्रांतिकारी एवं अराजकता अधिनियम) बना। इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को बिना कारण बताए गिरफ्तार कर जेल में डाला जा सकता था इसके खिलाफ वह कोई भी अपील नहीं करसकता था।

(ii) जलियाँवाला बाग हत्याकांड-13 अप्रैल, 1919 ई० को बैसाखी मेले के अवसर पर पंजाब के जलियाँवाला बाग में सरकार की दमनकारी नीति के खिलाफ लोग एकत्रित हुए थे। जनरल डायर के द्वारा वहाँ पर निहत्थी जनता पर गोली चलवाकर हजारों लोगों की जानें ले ली गयी। गाँधीजी ने इस पर काफी प्रतिक्रिया व्यक्त किया।

(iii) खिलाफत आंदोलन- इसी समय खिलाफत का मुद्दा सामने आया 1919 में अलीबंधुओं ने खलीफा की शक्ति की पुनर्स्थापना के लिए खिलाफत आंदोलन आरंभ किया। गाँधीजी ने इस अंदोलन को अपना समर्थन देकर हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने और एक बड़ा सशक्त अंग्रेजी राज विरोधी असहयोग आंदोलन आरंभ करने का निर्णय लिया। परिणाम- 5 फरवरी, 1922 ई. को गोरखपुर के चौरी-चौरा नामक स्थान पर हिंसक भीड़ द्वारा थाने पर आक्रमण कर 22 पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी गयी। जिससे नाराज होकर गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को तत्काल बंद करने की घोषणा की। असहयोग आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा।असहयोग आंदोलन के अचानाक स्थगित हो जाने और गाँधीजी की गिरफ्तारी के कारण खिलाफत के मुद्दे का भी अंत हो गया। हिंदू-मुस्लिम एकता भंग हो गई तथा संपूर्ण भारत में संप्रदायिकता का बोलबाला हो गया। न ही स्वराज की प्राप्ति हुई और न ही पंजाब के अन्यायों का निवारण हुआ। असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप ही मोतीलाल नेहरू तथा चितरंजन दास के द्वारा स्वराज पार्टी की स्थापना हुई।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

8. सविनय अवज्ञा आंदोलन का वर्णन करें।

उत्तर- 1920 और 1930 के बीच में भारतीय राष्ट्रवादी गतिविधियाँ बढ़ गई थीं। असहयोग आंदोलन की विफलता, 1919 के अधिनियम तथा साइमन आयोग (1927) से असंतोष, नेहरू रिपोर्ट (1928) को सभी दलों का सहयोग न मिलना और हिन्दू-मुस्लिम असहमति पूर्ण स्वराज्य की माँग (1929) आदि के कारण भारतीय राजनीति में उबाल आ गया था। ऐसे माहौल में गाँधीजी ने नमक कानून के विरोध के द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया। इस आंदोलन में सभी वर्ग के लोगों ने भाग लिया। इस प्रकार यह राष्ट्रीय स्तर का आंदोलन साबित हुआ। इसके पश्चात भारतीयों ने ब्रिटिश राजनीतिक व आर्थिक नीतियों का विरोध किया।

9. उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं? औद्योगीकरण ने कैसे उपनिवेशकर को जन्म दिया?

उत्तर-विकसित देशों द्वारा अविकसित देशों पर अधिकार कर उसकी सामाजिक आर्थिक , सांस्कृतिक एवं उसके शासन प्रबन्ध पर नियंत्रण कर लेने को ही उपनिवेशवाद कहते हैं। आरंभ में वहाँ के आर्थिक संसाधनों का उपयोग किया , परन्तु आगे चलकर वहाँ के राजनीतिक व्यवस्था पर भी अधिकार कर लिया यूरोपीय प्रजातियों ने एशिया और अफ्रीका पर आधिपत्य स्थापित किया औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप सर्वप्रथम उपनिवेशवाद का आरंभ हुआ के उद्योगों को कच्चा माल एवं वहाँ के कारखानों में निर्मित सामानों की बिक्री के लिए बाजार की आवश्यकता थी। जैसे - जैसे औद्योगीकरण की गति वैसे - वैसे उपनिवेशीकरण में तेजी आई। इंगलैंड के अतिरिक्त फ्रांस और जर्मनी ने भी अपने उपनिवेश स्थापित किए। उपनिवेशीकरण और औद्योगीकरण न साम्राज्यवाद को बढ़ावा दिया साम्राज्यवारी प्रवृत्ति विश्वयुद्धों का कारण बनी। प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध का यह एक प्रधान कारण था। दूसरे देशों के उपनिवेशों पर अधिकार करने की नीति ने प्रतिद्वंद्विता एवं संघर्ष को जन्म दिया। 20 वीं शताब्दी में उपनिवेशों में शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया आरंभ हुई। इसी क्रम में एशिया में भारत ब्रिटेन के एक विशाल उपनिवेश के रूप में उभरा।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

10. न्यूनतम मजदूरी कब पारित हुआ और इसके क्या उद्देश्य थे?

उत्तर- मजदूरों की आजीविका एवं उसके अधिकारों को ध्यान में रखते हुए सरकार सन् 1948 ई. में न्यूनतम मजदूरी कानून पारित किया।

उद्देश्य- न्यूनतम मजदूरी कानून 1948 के द्वारा कुछ उद्योगों में मजदूरी की दरें निश्चित की गयी। प्रथम पंचवर्षीय योजना में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया तथा दूसरी योजना में यहाँ तक कहा गया कि न्यूनतम मजदूरी उनकी ऐसी होनी चाहिए जिससे मजदूर केवल अपना ही गुजारा न कर सके, बल्कि इससे कुछ और अधिक हो, ताकि वह अपनी कुशलता को भी बनाये रख सके। तीसरी पंचर्षीय योजना में मजदूरी बोर्ड स्थापित किया गया और बोनस देने के लिए बोनस आयोग की भी नियुक्ति हुई।

11. गाँव के कृषिजन्य आर्थिक क्रियाकलापों की विशेषता को दर्शाएँ |

उत्तर- ग्रामीण आबादी का बहुत बड़ा भाग कृषिजन्य आर्थिक क्रियाकलापों से जुड़ा रहता है। खेती इनकी आजीविका का मुख्य साधन है। अधिकांश वस्तुएं कृषि उत्पाद से जुड़ी होती है जो इनकी आय का प्रमुख स्रोत होती है। गाँवों में अनेक लघु एवं कुटीर उद्योग तथा शिल्पकलाओं में भी लोग संलग्न रहते हैं जिससे स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। गाँव की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था मूलतः जीवन - निर्वाह अर्थव्यवस्था की अवधारणा पर आधारित होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

12. नई आर्थिक नीति क्या है ? विवेचना करें।

उत्तर :-ब्रेटेन वुड्स सम्मेलन जुलाई , 1944 ई ० में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर स्थान पर हुआ था जिसका मुख्य उद्देश्य औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार था। क्योंकि इसी आधार पर विश्व शांति स्थापित की जा सकती थी। आर्थिक महामंदी का आरंभ अमेरिका में हुआ था जो 1929 से 1933 तक बना रहा। महामंदी से उबरने के लिए रूजवेल्ट ने नई आर्थिक नीति अपनाई। इस नयी नीति के अनुसार जनकल्याण की व्यापक योजना बनाई गई। इसका प्रमुख उद्देश्य कृषि और उद्योग में संतुलन स्थापित करना साथ ही मानव समाज और स्वाधीनता को सुरक्षित रखना भो था। जनकल्याण के तहत रेलमार्ग , सड़क , पुल एवं स्थानीय विकास के कार्य के लिए ऋण दो गई ताकि रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो सके। औद्योगिक क्षेत्र में व्यापार और उत्पादन का नियमन , मजदूरी में

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◄

वृद्धि , काम के घंटे तय करना , मूल्यों में वृद्धि को रोकना इत्यादि कार्य किए गए। कृषि क्षेत्र में किसानों की क्रय शक्ति तथा सामान्य आर्थिक स्थिति को युद्ध के पूर्व के स्तर तक ले जाने का प्रयास हुआ।

13. भूमंडलीकरण के कारण आम लोगों के जीवन में आने वाले परिवर्तनों को सपष्ट करें।

उत्तर :-भूमंडलीकरण राजनीतिक , आर्थिक , सामाजिक , वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विश्वव्यापी समायोजन की प्रक्रिया को कहा जाता है। यह विश्व स्तर पर लोगों को भौतिक , सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर एकीकृत कर एकरूपता लाने का प्रयास करता है। भूमंडलीकरण के कारण आम लोगों के जीवन स्तर में काफी परिवर्तन आए हैं। अभी हम रह रहे हैं उसमें आर्थिक भूमंडलीकरण का जीवन पर साफ दिख रहा है। भूमंडलीकरण के कारण आम लोगों के जीविकोपार्जन के क्षेत्र में जो बदलाव आया है उसकी झलक शहर , करावा सभी जगह स्पष्ट दिखाई पद है। वर्तमान दौर में 1991 के बाद संपूर्ण विश्व में सेवा क्षेत्र का विस्तार काफी तीज गति से हुआ है , जिसमे जीविकोपार्जन के कई नये क्षेत्र खुले हैं। भूमंडलीकरण के कारण कई निजी (प्राइवेट कंपनी या बैंक (रिलायंस आई.सी. आई- सी आई) में लोग लाभकारी योजनाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित हुए हैं जिससे सीमा क्षेत्र का विस्तार हुआ है। इससे जुड़कर गाँव या शहर के लाखों लोग रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। पर्यटन स्थल के विकास के कारण भी रोजगार के नवीन अवसर उपलब्ध हुए हैं , जैसे - दूर एवं ट्रेवल एजेंसी , रेस्ट हाउस , रेस्टोरेंट , आवासीय होटल इत्यादि निजी डाक सेवा (फोरियर सेवा) , कंप्यूटर , इंटरनेट के कारण भी हजारों लोगों के रोजगार के नवीन अवसर सृजित हुए हैं। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने आम लोगों के जीवन स्तर को भी बढ़ाया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं , किधूमंडलीकरण ने आम लोगों के जीवन स्तर में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

14. विश्व बाजार के स्वरूप को स्पष्ट करें।

उत्तर :-जहाँ विश्व के विभिन्न देशों के व्यापारी सामानों की खरीद-बिक्री करतेहैं, विश्व बाजार कहलाता है। 19वीं शताब्दी से विश्व में अनेक महत्त्वपूर्णबदलाव आए। ये बदलाव आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक औरतकनीकी कारणों से आए जिसका समस्त विश्व पर व्यापक प्रभाव पड़ा।औद्योगिक क्रांति ने विश्व बाजार का विस्तार किया। औद्योगिक क्रांति केद्वारा उत्पादन के बढ़ते आकार के कारण कच्चे माल तथा तैयार माल केलिए बाजार की आवश्यकता हुई। इस विश्व बाजार का आधार कपड़ा था।औद्योगिक क्रांति के फैलाव के साथ-साथ बाजार का स्वरूप भी विश्वव्यापीहोता गया। साथ ही, व्यापार, पूँजी के प्रवाह और श्रमिकों के पलायन ने भीविश्व बाजार के स्वरूप को विस्तृत किया। इस प्रक्रिया में उपनिवेशवाद नेमहत्त्वपूर्ण योगदान किया।

15. 1929 के आर्थिक संकट के कारण एवं परिणामों को स्पष्ट करें।

उत्तर :-1929 के आर्थिक संकट के कारण-

(i) कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन के कारण विश्व बाजारों में खाद्यान्नों की आपूर्ति आवश्यकता से अधिक हो गई। इससे अनाज के मूल्य में कमी आई उनका खरीददार नहीं रहा।

(ii) गरीबी और बेरोजगारी से उपभोक्ताओं की क्रय क्षमता घट गई थी, अतः विश्व बाजार पर आधारित व्यवस्था लड़खड़ा गई।

(iii) अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी आर्थिक संकट का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारण था। स्वयं अमेरिकी अर्थव्यवस्था भी संकटग्रस्त हो गई। इसने महामंदी की स्थिति ला दी।

1929 के आर्थिक संकट के परिणाम आर्थिक महामंदी का विश्वव्यापी प्रभाव पड़ा। यूरोपीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई। यूरोप के अनेक बैंक रातों-रात बंद हो गए। अनेक देशों की मुद्रा का अवमूल्यन हो गया। अनाज और कच्चे माल की कीमतें घटने लगी। व्यापक विश्व बाजार का स्थान संकुचित आर्थिक राष्ट्रवाद ने ले लिया। भारत में किसानों की दयनीय स्थिति हो गई। बंगाल का पटसन उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। व्यापार में गिरावट आई। भारत से ब्रिटेन सोना का निर्यात करने लगा।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

16. भूमंडलीकरण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के योगदान (भूमिका) को स्पष्ट करें।

उत्तर :- 19वीं शताब्दी के मध्य से जब पूँजीवादी विश्वव्यापी व्यवस्था बन गया, भूमंडलीकरण का स्वरूप भी व्यापक होता गया। इस समय पूँजी का निर्यात अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों की एक मुख्य विशेषता बन गई और व्यापार का परिमाण भी काफी बढ़ा। धीरे-धीरे यह संपूर्ण विश्व के अर्थतंत्र का नियामक हो गया। इसके प्रभाव को कायम करने में विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संस्था तथा पूँजीवादी देशों की बड़ी-बड़ी व्यापारिक और औद्योगिक कंपनियाँ जिन्हें हम बहुराष्ट्रीय कंपनी कहते हैं, का बहुत बड़ा योगदान था। मुक्त बाजार, मुक्त व्यापार, खुली प्रतिस्पर्धा निगमों (कंपनी) का प्रसार, उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का निजीकरण उक्त आर्थिक भूमंडलीकरणके मुख्य तत्त्व हैं।

17. मुद्रण क्रांति ने आधुनिक विश्व को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर :- मुद्रण क्रांति का विश्व पर व्यापक प्रभाव पड़ा। मुद्रण क्रांति ने आम लोगोंकी जिन्दगी ही बदल दी। मुद्रण क्रांति के कारण छापाखानों की संख्या मेंभारी वृद्धि हुई। जिसके परिणामस्वरूप पुस्तक निर्माण में अप्रत्याशित वृद्धिहुई। मुद्रण क्रांति के फलस्वरूप किताबें समाज के हर तबकों के बीच पहुँच पायी । किताबों की पहुँच आसान होने से पढ़ने की एक नई संस्कृति विकसित हुई। एक नया पाठक वर्ग पैदा हुआ तथा पढ़ने के कारण उनके अंदर तार्किक क्षमता का विकास हुआ। पठन-पाठन से विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ तथा तर्कवाद और मानवतावाद का द्वार खुला। धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिच्चानवें स्थापनाएँ लिखी। फलस्वरूप चर्च में विभाजन हुआ और प्रोटेस्टेंटवाद की स्थापना हुई। इस तरह छपाई से नए बौद्धिक माहौल का निर्माण हुआ एवं धर्म सुधार आंदोलन के नए विचारों का फैलाव बड़ी तेजी से आम लोगों तक हुआ। वैज्ञानिक एवं दार्शनिक बातें भी आम जनता के पहुँच से बाहर नहीं रही। न्यूटन, टामसपेन, वाल्तेयर और रूसो की पुस्तकं भारी मात्रा में छपने और पढ़ी जाने लगी।मुद्रण क्रांति के फलस्वरूप प्रगति और ज्ञानोदय का प्रकाश यूरोप में फैल चुका था लोगों में निरंकुश सत्ता से लड़ने हेतु नैतिक साहस का संचार होने लगा था। फलस्वरूप मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀

3. भारतीय प्रेस की विशेषताओं को लिखें।

उत्तर :-19वीं शताब्दी से भारत में समाचार पत्रों के प्रकाशन में तेजी आई, परंतु अब तक इसका प्रकाशन और वितरण सीमित स्तर पर होता रहा। इसका एक कारण यह था कि सामान्य जनता एवं समृद्ध कुलीन और सामंत वर्ग राजनीति में रुचि नहीं लेता था। इसके बावजूद भारतीय समाचार-पत्रों ने सामाजिक-धार्मिक समस्याओं से जुड़े ज्वलंत प्रश्नों को उठाया। समाचार-पत्रों ने न्यायिक निर्णयों में किए गए पक्षपातों, धार्मिक मामलों में सरकारी हस्तक्षेप और औपनिवेशिक प्रजातीय विभेद की नीति की आलोचना कर राष्ट्रीय चेतना जगाने का प्रयास किया।यद्यपि 1857 के विद्रोह के बाद भारतीय समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि हुई। परंतु ये प्रजातीय आधार पर दो वर्गों ऐंग्लो-इंडियन और भारतीय प्रेस में विभक्त हो गई। ऐंग्लो-इंडियन प्रेस ने सरकार के समर्थन में रुख अपनाया। इसे सरकारी समर्थन और संरक्षण प्राप्त था। ऐंग्लो-इंडियन प्रेस को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे। यह अंग्रेजों के 'फूट डालो और शासन करो' की नीति को बढ़ावा देता था तथा सांप्रदायिक एकता को बढ़ावा देनेवाले प्रयासों का विरोध करता था। इसका एकमात्र उद्देश्य ब्रिटिश राज के प्रति वफादारी को भावना का विकास करना था। इसके विपरीत भारतीय प्रेस ने अंग्रेजी सरकारी नीतियों की आलोचना की। भारतीय दृष्टिकोण के ज्वलंत प्रश्नों (सामाजिक-राजनीतिक) को रखा तथा भारतीयों में राष्ट्रीयता एवं एकता की भावना जागृत करने का प्रयास किया। ऐसे समाचार पत्रों में 'अमृत बाजार पत्रिका,' 'हिन्दू पैट्रियट' एवं 'सोमप्रकाश' के नाम प्रमुख हैं। इनके पत्रिकाओं में राजा राममोहन राय, दादाभाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी आदि के लेखों से राष्ट्रीय आंदोलन को गति मिली।

➤ Class 10 Notes, Model Paper, Objective & Subjective PDF, Question Bank के Mob. 8210423200 पर मैसेज करें | ◀